RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 20 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 20 अक्टूबर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

दीपों का उजियारा सद्बुद्धि दे चहुँ ओर

कार्यालय प्रतिनिधि

मौसम बदल चुका है। दीपों के त्यौहार के साथ ही उच्चहिमालय में शीत की लहर और माइग्रेशन परिवारों का घाटियों को आने का क्रम शुरू हो चुका है। जो लोग शहरी वातावरण में हैं, वह कल्पना भर से समझ सकते हैं कि दूरस्थ क्षेत्रों की कठिनाईयों में रहने वाले जब माइग्रेशन में अपने घर को छोड़कर आते हैं तो प्रकृति के साथ उनकी कितनी भिड़ाई होती होगी। अपना घर छोड़ने से पहले उसकी साफ सफाई, सामान को संभालना और आते समय दीप जलाकर हमेशा उजियारे की कामना कर लौटते परिवार वाकेई प्रकृति देव के साधक हैं। जो प्राकृतिक आपदाओं के घनघोर में भी कभी हिम्मत नहीं हारते। दुनिया छल फरेब से दूर ऐसे साधकों को बारम्बार प्रणाम। इनकी जीवन शैली से सभी को सीख लेनी चाहिये। इनको याद करने भर से विपदाओं में भी साहस रहता है। यहीं से शुरू होता है त्यौहारों का रेला और प्रकृति के बदलते स्वरूप के साथ हमारे त्यौहार संचालित होते हैं। इन्हीं में से एक है 'दीपावली'।

दीपों का यह त्यौहार हम सभी को अन्धेरे से उजियारे की ओर जाने का मार्ग दिखाता है। हम चाहे जिन स्थितियों में रहें, मानवीय गुणों के साथ अपने लोक चरित्र को न भूलें। वर्तमान की दौड़ में अपनी बुनियाद को भूलने वाले ठोकर खा सकते हैं। हमें अपनी हदों में रहने के लिये त्यौहारों की वृहद व्यवस्था है और दीपावली जैसा त्यौहार तो निराशाओं को आशा में बदलने वाला है।

'लास्पा बनकटिया' नाम से उच्चारित करने पर होगी खुशी

देहरादून/मुनस्यारी। पर्यटन विभाग ने मल्ला जोहार स्थित बनकटिया बेस कैम्प को वर्ष 2025 का ट्रैक ऑफ द ईयर घोषित किया है, इससे क्षेत्रवासियों में खुशी है कि बनकटिया से लास्पा ग्लेशियर तक पर्यटकों को ट्रैकिंग कराई जाएगी। साथ ही सामाजिक कार्यकर्ता भूपाल सिंह लास्पा से शुरू से ही इस बात पर जोर देते रहे हैं कि लास्पा स्थित बनकटिया ट्रैक को केवल बनकटिया नाम से उच्चारित न करते हुए 'लास्पा बनकटिया' कहा जाए। इससे पर्वतीय भूगोल और और क्षेत्रवासियों की भावनाओं का सम्मान होगा। श्री भूपाल सिंह ने सभी से आग्रह किया है कि ज्वार-मुनस्यार क्षेत्र के मूल निवासियों के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्द्धन के साथ प्राकृतिक नैसर्गिक सौन्दर्य बोध को उजागर करने वाला पर्यटन स्थल 'लास्पा बनकटिया' के महत्व पर अवश्य ध्यान आकृष्ट करें। इससे स्थानीय जनमानस अपने को भावनात्क रूप से सम्मानित महसूस करेगा।

भारत के मीलपत्थर

सूर्यकान्त बाली

जिन पाठकों ने महाभारत के पात्रों के साथ इस स्तम्भ को पढ़ना शुरू किया होगा वे तो ऐसा मान ही चुके होंगे, बल्कि वे पाठक भी जो शुरू से उसे पढ़ रहे होंगे पर महाभारत के पात्रों और तब की घटनाओं के हमारे विवेचन में प्रशंसा और आलोचना के साथ रम गए होंगे, उनको भी ऐसा लगने लगा होगा कि जैसे हम महाभारत की ही नए सन्दर्भों की व्याख्या कर रहे हैं। ऐसा नहीं है। अपनी इस 'भारत गाथा' में हम अपने इस महान, प्राचीन देश के उन महापुरुषों, महती घटनाओं, महाग्रन्थों, महत्वपूर्ण स्थानों, महनीय आन्दोलनों और उन तमाम ऐसी बातों को मोटे तौर पर कालक्रम के सिलसिले में पेश कर रहे हैं जिन्होंने भारत की सभ्यता के विकास में किसी न किसी खास तरह से अपना योगदान किया है, अपना खास नाम इतिहास को हमारी स्मृतियों और परम्पराओं में अंकित किया है।

इन्हीं महापुरुषों, घटनाओं, ग्रन्थों, स्थानों, आन्दोलनों को हम वे मीलपत्थर कहते हैं जिन्होंने भारत की सभ्यता की राह आगे बढ़ाई है या जो भारत के इतिहास के महाजनपथ के अलग अलग लेकिन महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। आप चाहें तो इन्हें प्रकाशस्तम्भ भी कह सकते हैं। आज हम भागवतपुराण नामक महाग्रन्थ पर इसी सन्दर्भ में लिख रहे हैं तो आगे के आलेखों में क्रमशः शुकदेव और वेदव्यास पर लिखकर हम द्वापर को पार कर उस युग में प्रवेश कर जाएंगे जिसे हमारे कालवैज्ञानिकों ने कलियुग कहा और जिस कलियुग को हमारे पुराणकारों ने, ठीक या गलत, पाप और अत्याचार का पर्यायवाची मान लिया है।

भागवत के बारे में एक दिलचस्प कथा हम परम्परा से सुनते आ रहे हैं। महाभारत लिख चुकने के बाद वेदव्यासा बेचैन हो गए। इस विराट् प्रबन्धकाव्य में छल और प्रपंच से भी कथाओं, महल-षड्यन्त्रों, नैतिक आचार का उल्लंघन करने वाली घटनाओं, अठारह दिनों के अल्पकाल में भारतवर्ष के अठारह अक्षैरिणी संख्या के योद्धाओं के विनाश का ऐसा त्रासद वर्णन वेदव्यास के हाथों हुआ कि उनके मन की शान्ति भंग हो गई।

भक्ति परम्परा की प्राचीन कथा

कितनी विडम्बना है कि उन्होंने देश को महाभारत के रूप में ऐसा राष्ट्रीय प्रबन्धकाव्य दिया कि जिसे प्रबन्धकाव्य ही नहीं, बल्कि धर्मशास्त्र और उससे भी बढ़कर पाँचवा वेद का दर्जा इस देश को उसके बाद की पाँच हजार साल की परम्परा ने दिया। पर इस प्रबन्धकाव्य को लिखकर वेदव्यास बेचैन हो गए। जब नारद से उन्होंने अपना सन्ताप बताया तो नारद ने उन्हें कृष्ण की लीलाओं का भगतान करने को कहा। भागवत महापुराण वेदव्यास को नारद से मिली प्रेरणा से उपजे संकल्प का फल है।

परन्तु वेदव्यास तो वेदव्यास थे। उन्होंने चार वेदों को अन्तिम रूप से लिपिबद्ध करवा कर संगृहीत करवाया। एक लाख श्लोकों वाली महाभारत को एक प्रबन्ध काव्य के रूप में लिखा और कहते हैं (आगे चलगकर हम उसका विवेचन करेंगे ही) कि वेदव्यास ने अठारह महा पुराणों का संकलन किया। इतने उद्भट विद्वान के हाथों जो भी लिखा जाएगा वह अद्भुत ही होगा। वेदव्यास की विद्वता पर कहीं अगर आपको भागवतपुराण पढ़ते वक्त भी आपको मिल जाता है।

भागवतपुराण को महापुराण कहा गया है। पिछली बार राजा परीक्षित के विवरण में हमने देखा कि कैसे उस राजा को सप्ताह भर सुनाए जाने के कारण भागवतपुराण के सप्ताहपुराण की परम्परा इस देश में चल पड़ी। इस बार उस महापुराण के बारे में दो बातें और खासतौर से कहनी हैं। एक कि भागवतपुराण में कृष्ण की लीलाओं का अद्भुत वर्णन है। उनके जन्म से लेकर उनके स्वधाम गमन तक, जिसे सामान्य शब्दावलि में हम मृत्यु कहते हैं, पर पूर्णावतार मान लेने के कारण इस शब्द का प्रयोग निरर्थक हो जाता है, इसलिए स्वधाम गमन तक का कृष्ण का सारा जीवन अपने सभी विस्तारों और आयामों में भगवान में वर्णित है। दूसरी बात यह है कि भागवतपुराण को इतना ज्यादा विद्वत्ता से भरा ग्रन्थ माना गया है कि इसे समझना और समझाना विद्वानों के लिए मानो कसौटी बन गया है। इसमें अनेक श्लोक इस तरह के हैं कि जिनकी एक से अधिक व्याख्याएं की गई हैं। इसीलिए स्वयं भागवत के प्रारम्भिक श्लोक, (संख्या 3) में इस महापुराण को 'नगमकल्पतरोर्गलिंग फलम्' कहा गया है, यानी वेद यदि कल्पवृक्ष के समान है तो भागवत पुराण उस कल्पवृक्ष का पका हुआ फल है। जाहिर है कि वेदव्यास कहना चाहते हैं कि वे भागवत पुराण को वेदों जितना ही महत्वपूर्ण मानते हैं।

इस महापुराण को एक ऐसा महावृक्ष, भक्ति का ऐसा विराट वृक्ष माना गया है कि इसके अध्यायों को इस महावृक्ष के स्कन्ध यानी कन्धे यानी तने माना है। सम्पूर्ण भागवत को बारह स्कन्धों में बाँटा गया है और सिर्फ दो स्कन्धों अर्थात् स्कन्ध संख्या दस और ग्यारह में ही कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है। पर इसमें जानने लायक दिलचस्प बात यह है कि भागवतपुराण के जितने श्लोक कुल मिलाकर बाकी दस स्कन्धों में हैं,

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

केवल पटाखों की मौज नहीं है दीपावली त्यौहार

दीपावली का त्यौहार उल्लास का वह त्यौहार है जिसमें सक्षम लोगों द्वारा जरूरतमंदों को मदद की जाती है। असल में त्यौहारों का मतलब भी यही है कि वह हम सबको आपस में मेल-मिलाप कराएं। किसी को इस बात का मलाल न रहे कि वह किन्हीं कारणों से भी कमजोर है। लेकिन देखने में आ रहा है कि त्यौहारों की मौज के नाम पर दिखावा व प्रदर्शन ने बड़ी जनसंख्या को भीतर से घायल कर दिया है। दीपावली का त्यौहार तो इसमें और भी ज्यादा घाव करने वाला हो जाता है जब हजारों-लाखों के पटाखे जलाने वाले सिर्फ पटाखों की आवाज और उसके धुंए पर खुश होते हैं। जबकि अपनी आर्थिक परिस्थितियों से परेशान परिवारों के सामने त्यौहार का दस्तूर और उनके बच्चों के लिये मजबूरी भीतर से रुलाती है।

मान्यता है कि अयोध्या के राजा भगवान राम जब रावण को परास्त कर लौटे तो उस खुशी में दीपों का त्यौहार मनाया गया। खुशी के इस अवसर को घर-घर मनाया जाता है। पूजा-पाठ कर लक्ष्मी की कामना भी की जाती है। व्यापारी वर्ग अपने प्रतिष्ठानों में विशेष पूजन करवाते हैं और अपने बही-खाते भी पूजते हैं। गृहस्थी लोग घरों में साफ-सफाई के अलावा कुछ न कुछ सामान शगुन मानते हुए खरीद करते हैं। सक्षम लोगों की ओर बहुत से आस लगाए रहते हैं कि वह सहयोग करेंगे। आफिस-स्टाफ सभी जगह खुशियों का वातावरण होता है। यही सब होना भी चाहिये और आतिशी नजारा भी निहारा जा सकता है। इन सबके बावजूद त्यौहार में सबसे नेक कार्य यही है कि हम किसी की मदद कर सकें।

केवल पटाखों की मौज को दीपावली मान लेना बचकानी बात होगा। इसके अलावा पटाखों की भरमार से जिस प्रकार का प्रदूषण फैलता है, उसमें तो और भी सावधान होने की जरूरत है। आओ हम सब मिलकर त्यौहारों का सही अर्थ समझें और सामाजिक समरसता की ओर बढ़ें। मदद को हाथ बढ़ाएं। यही सबसे बढ़ा उजियारा है।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

यूपीआई ग्राहक नकदी निकाल सकेंगे

मुम्बई। डिजिटल भुगतान को और आसान तथा सुरक्षित करने के लिये राष्ट्रीय भुगतान निगम ने यूपीआई से जुड़ी कई नई सुविधाएं शुरू की है। इसके तहत ग्राहक अब माइक्रो एटीएम पर यूपीआई से नकद निकासी कर सकेंगे। इसके लिए उन्हें यूपीआई कैश प्वाइंट पर जाना होगा।

ऑनलाइन बैंक अधिक सुरक्षित होगा

नई दिल्ली। आरबीआई अब बैंक जमा को डिजिटल टोकन में बदलने की दिशा में बड़ा कदम उठाने जा रहा है। इसके लिए 'डिपॉजिट टोकनाईजेशन' का पायलट प्रोजेक्ट शुरू करेगा। यह प्रयोग शुरू में कुछ चुनिन्दा बैंकों के साथ किया जाएगा। बताया जा रहा है कि इसमें बैंकिंग लेनदेन और ज्यादा सुरक्षित होगा।

बेबी पाउडर से मौत, कम्पनी पर जुर्माना

कैलिफोर्निया। अमेरिका में लॉस एंजिलिस की अदालत ने जॉनसन एण्ड जॉनसन को मेसोथेलियोमा कैंसर से मरने वाली एक महिला के परिवार को 8500 करोड़ रुपये का भुगतान करने का आदेश दिया है। अदालत ने कम्पनी को महिला की मौत के लिये उत्तरदायी ठहराते हुए यह जुर्माना लगाया। परिजनों का दावा था कि महिला ने जिन्दगी भर कम्पनी के बेबी पाउडर इस्तेमाल किया। इसके चलते उन्हें कैंसर हुआ।

हंगरी के लास्लो को साहित्य का नोबेल

स्टॉकहोम। हंगरी के लेखक लास्लो क्रास्नाहोरकाई को इस साल का साहित्य नोबेल पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार की घोषणा करते हुए करीब 71 वर्षीय क्रास्नाहोरकाई की प्रशस्ति में कहा गया है कि उन्हें उनके सम्मोहक और दूरदर्शी रचनाकर्म के लिए चुना गया है जो सर्वनाशी भय के बीच कला की ताकत की पुष्टि करता है। लास्लो क्रास्नाहोरकाई की पहली कृति 'सैटानटैंगो' के साथ ही 'द मेलांकली ऑफ रेसिस्टेंस' सहित कई कृतियों को हंगेरियन निर्देशक बेला टार ने फिल्मों में रूपान्तरित किया है।

मचाडो को नोबेल शान्ति पुरस्कार

स्टॉकहोम। वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो को इस वर्ष का नोबेल शान्ति पुरस्कार दिया गया है। नॉर्वे की नोबेल समिति ने मचाडो को लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और महिला नेतृत्व की प्रतीक बताते हुए सम्मानित किया। मचाडो वर्षों से राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के अधिनायकवादी शासन के खिलाफ अहिंसक संघर्ष का चेहरा है।

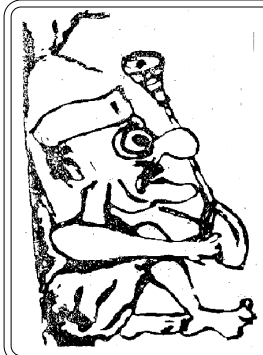

फसक

दाज्यू, नियम पूछ ही कौन रहा ठैरा

मांग मनवाने के लिये हकाहाक धताधात करते हैं बल

दाज्यू, श्रीगर में आईटीई कार्यकर्ता कुशल नाथ ने मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री को पत्र लिखकर प्रदेश के प्राइमरी से लेकर कालेज स्तर के शिक्षकों के कार्यस्थल से 8 किमी के भीतर निवास करने और विद्यालय में नियमित 8 घण्टे रहरने के आदेश लागू करने की मांग की है। दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए आजकल नियम पूछ ही कौन रहा ठैरा। वह जमाना गया जब मास्साब पूजा-पाठ कर स्कूल आ जाते और सायं तक पढ़ाई-लिखाई के बाद फूल-क्यारी के काम में लग जाते, बच्चों को नि:शुल्क ट्यूशन पढ़ाते, सामाजिक कार्यों में हाथ बंटाते। दाज्यू, हमारे गाँव के बुमका मास्साब हाफ-पाव गटक कर दुनिया के समाचार सुनाते हैं। कह रहे थे- 'बेसुमार तनख्वाह है। लौंडा गोवा में है और बीबी का ब्यूटीपार्लर। सरकार मस्त, नेता भी मस्त। हमने क्या बिगाड़ रखा है।' दाज्यू, बुमका मास्साब गणित वाले हैं, ठीक ही कह रहे होंगे। दाज्यू, अल्मोड़ा जिले में सीबीएससी पैटर्न वाले अटल उत्कृष्ट स्कूलों में अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं शुरू हो चुकी हैं लेकिन छात्रों को अभी तक कई विषयों की पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पाई हैं बल। दूसरी ओर शिक्षा मंत्री धन दा कह रहे हैं- 'प्रदेश के 840 राजकीय विद्यालय वर्चुअल क्लास से जुड़ेंगे। जिससे इन विद्यालयों में हाइब्रिड मोड के तहत वर्चुअल और स्मार्ट क्लास दोनों का संचालन होगा।'

हम तो कह रहे हैं दुनिया को चलने दो जैसे चलती है। कोई फायदा नहीं किसी से कह-सुनकर। दयालु लोग तो रहे नहीं जो हमारी बात मान लेंगे। आजकल तो मांग मनवाने के लिये हकाहाक धताधात करते हैं बल। दबंग नेताओं की रील सोशल मीडिया पर घूमती रहती हैं कि किस प्रकार वह किसी अधिकारी के सामने जोर-जोर से सवाल करते हैं और उनके साथी नारेबाजी.....। मादर-फादर तो चलता रहा है।

दाज्यू, कपकोट के जगथाना गाँव के मंगल दल सदस्यों ने शराब ढो रहे वाहन को घेर लिया और दो युवकों को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया। दाज्यू, सीएनआई गर्ल्स इण्टर कालेज देहरादून में छात्राओं से वसूल की गई संचायिका राशि में गड़बड़ी पर तत्कालीन प्रधानाचार्य समेत शिक्षकों व कर्मचारियों पर कार्रवाई की तलवार लटक गई है। आरोप लग रहा है कि अलमारी के साथ कुछ दस्तावेज लापता हो सकते हैं बल। पता नहीं कौन सा नियम चल रहा है और क्या जो होने वाला है।

रुद्रपुर में विधायक शिव अरोरा और पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल की तनातनी कम होने का नाम नहीं ले रही है। मोहित कोली हाथापाई और पूर्व विधायक ड्राइवर प्रकर में पहले नेताओं की मुंहजोरी होती, बाद में इनके समर्थक आमने-सामने आ गये। दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए जब समर्थक सामने आते हैं तो अपने नेता को दिखाने के लिये उनका टैम्पो हॉय होने ही वाला ठैरा। दोनों पक्षों ने पुतला दहन कर डाला। एक-दूसरे पर अपरधियों को संरक्षण देने का आरोप लगा रहे हैं बल।

हरिद्वार के आर्मी एरिया में फर्जी सैन्य कर्मी पकड़ा गया। आरोपी से 18 डेबिट कार्ड, सेना की वर्दी, नेम प्लेट, फर्जी आर्मी कार्ड व ज्वाइनिंग लेटर बरामद किया गया। दाज्यू, चारों ओर हकाहाक है और सबके अपने नियम। नगर निगम हरिद्वार के ग्राम सराय में भूमि खरीद घोटाले में आरोपी तत्कालीन डीएम कर्मेन्द्र सिंह, नगर आयुक्त वरुण चौधरी और एसडीएम अजयवीर सिंह के खिलाफ सरकार ने विभागीय जांच शुरू कर दी है बल। हल्द्वानी के वनभूलपुरा में बिना फूड लाइसेंगस के संचालित फैक्ट्रियों को सील किया गया। इनमें दीपावली के लिये खील-खिलौने और बताशे बनाए जा रहे थे, जिसमें टेलकम पाउडर और नॉन फूड रसायनिक पदार्थ मिलाया जा रहा था बल।

हमारे गाँव के बगल वाले कस्बे में अभी तक करवाचौथ की खुमारी उतरी नहीं है। पूजा बाजार मेहंदी रचने लगा था और छत पर छन्नी, दिया-बाती, पूजा का सामान.....। बाजार की रौनक बढ़ाने को बहुत सारे उपाय होने लगे हैं। हर कोई सुपर स्टार है। समझ में नहीं आ रहा है क्या जो करें क्या न करें। हरिद्वार के भगवानपुर ब्लॉक प्रमुख करुणा कर्णवाल को तत्काल प्रभाव से निलम्बित कर दिया गया। आरोप है करुणा के ताऊ और दर्जाधारी राज्यमंत्री देशराज कर्णवाण ही उनके स्थान पर ब्लॉक प्रमुख के कार्यों का संचालन कर रहे थे। मामले की शिकायत मिलने पर प्रशासन ने जाँच की और निलम्बन करना पड़ा। दाज्यू, बागेश्वर में भाजपा के महामंत्री का गुलदस्ता भेंट कर रहे कोतवाल कैलाश नेगी और सिपाही नरेन्द्र गोस्वामी का तबादला हो गया। पुलिस की वर्दी में किसी पार्टी नेता का स्वागत करने के बाद जगह-जगह पुलिस पर सवाल उठने लगे थे कि पुलिस पार्टी वालों की है या सबके लिये समान है।

दाज्यू, कोई पंचर जोड़ रहा है तो कोई जोड़-जन्तर में लगा है। नैनीताल में डीएसबी छात्रसंघ अध्यक्ष समेत 5 के खिलाफ मुकदमा दर्ज होने पर जाँच चल रही है। हल्द्वानी के गौलापार में तो गजब ही होने लगा है। एक होटल के मालिक को 5-7 लोगों ने पीट दिया। पता नहीं अब मामले में क्या हो रहा होगा। दाज्यू, हम तो भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं कि अपनी दुनिया को संभाल लो। -तुम्हारा भुली झकरुवा

चेतावनी :

6 मिमी प्रति वर्ष की दर से खिसक रहा है नैनीताल

नैनीताल। बादल फटने की घटनाओं को लेकर मध्य हिमालय अब बेहद सम्वेदन शील होने लगा है। इंस्टीट्यूट ऑफ सीस्मोलॉजी के पूर्व वैज्ञानिक व पेट्रोलियम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गिरीश कोठियारी ने बताया कि मध्य हिमालय क्षेत्र में बादल फटने की घटनाओं में तेजी से वृद्धि हो रही है। उच्च हिमालय (ओरोग्राफिक बैरियर जोन) धारचूला-मुनस्यारी क्षेत्र में बादल फटने और भूस्खलन की घटना देखने को मिल रही है।

प्रो.कोटियारी बताते हैं कि भूस्खलन की दृष्टि से नैनीताल से लेकर टनकपुर, सूखीढांग का क्षेत्र बेहद सम्वेदनशील है। इन क्षेत्रों में पहाड़ लगातार कमजोर हो रहे हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में ड्रेनेज की बेहतर व्यवस्था न होने के चलते पहाड़ लगातार कमजोर हो रहे हैं और तेजी से खिसक रहे हैं। नैनीताल एक तरह से फॉल्ट जोन पर स्थित है और नैनीताल की लोड वेयरिंग कैपेसिटी कई वर्ष पूर्व समाप्त हो चुकी है। इसके बावजूद भी नैनीताल में लगातार निर्माण हो रहे हैं। नैनीताल के आसपास के क्षेत्र में हो रहे भूस्खलन के चलते नैनीताल 6 मिलीमीटर की दर से खिसक रहा है। इसके आसपास के क्षेत्र की पहाड़ी में बड़ी-बड़ी दरार पड़ने लगी हैं जो नैनीताल के लिए एक बड़ा खतरा है। कहा कि उत्तराखण्ड में भूस्खलन की दृष्टि से कुमाऊँ और गढ़वाल दोनों जोन बेहद सम्वेदनशील हैं। लगातार प्रदेश में भूस्खलन और बादल फटने की घटना के लिये मानव निर्मित कार्य जिम्मेदार हैं। जिस तरह से सम्वेदनशील क्षेत्रों में निर्माण हो रहे हैं उसे आने वाले समय में इस तरह की घटनाओं में तेजी से वृद्धि होगी क्योंकि वहाँ के पहाड़ खड़े और बिना पेड़ों के हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्मृति

दीपावली त्यौहार में दरकोट आर्मी कैम्प से फौजियों द्वारा छोड़े गए रंग-बिरंगी फुलझड़ियाँ

जगदीश सिंह बजवाल

हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार दीपावली देश दुनिया की तरह उत्तराखण्ड में मनाया जाता है। इसकी पर्वतीय झलक और भी निराली होती है क्योंकि इसमें लोक संस्कृति का मिश्रण भी होता है।

कुछ यादें सन् 1970-75 की स्मृतियों में उभर रहे हैं। भारत आजादी के 20-25 वर्ष हुए थे, देश गुलामी से बाहर तो हुआ परन्तु लोगों की माली हालज आज भी ठीक नहीं थी। बावजूद लोगों में अपने तीज-त्यौहार के प्रति उमंगता कम नहीं थी। हिन्दुवी संस्कृति के साथ-साथ लोक परम्परा की अद्भुतता का बेजोड़ समावेश त्यौहार होता था।

पहाड़ों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार, नये-नये विद्यालय खोले जा रहे थे। सरकारी नौकरियों के द्वार खुल गये किन्तु पढ़े-लिखे कम ही लोग थे। इसी दौर में जोहार के युवाओं ने पढ़-लिखकर सरकारी नौकरी हासिल कर ली। अपने समाज, समुदाय से अलविदा कहते रहे। गाँव वीरान हो गये, संस्कृति सांस्कृतिक विरासत पीछे छुपते रहा।

गाँव का सामुहिक, सामाजिक कार्य शादी-विवाह, पूजा-पाठ, होली-दीपावली, लोक पर्व का उत्सव आपसी मधुर सम्बन्धों से निभाते थे।

दीपावली के त्यौहार पर लेखक अतीत की अद्भुत स्मृतियों को उद्घाटित करता है। पड़ोसी एक किमी दूर गाँव ऊँचाई में स्थित 'दरकोट' जहाँ भारत-तिब्बत सीमा पर सुरक्षा हेतु आर्मी कैम्प (बैरक)

जवान तैनात किए गए थे.....लगभग तीस-चालीस जवान, अधिकारी सम्मिलित होंगे। सीमा प्रहरी के रूप में थे। जिन गाँवों से भी आर्मी कैम्प साफ नजर आता गाँव- जलथ, दुम्मर तल्ला-मल्ला, धापा, गोदी नदी पार के गाँव पातो, कुलथम, ढिलम, जौलदुगा, बसन्तकोट आदि इन ग्रामवासियों ने भी अवश्य उस रंग-बिरंगे चमत्कारी फुलझड़ियों का दृश्यावलोकन किया होगा।

फुलझड़ियों की यादें आर्मी कैम्प दरकोट से दीपावली के त्यौहार पर प्रतिवर्ष आकाश में राशि को छोड़ी जाती थी। फलझड़ियाँ हरे, लाल, नीले, पीले आदि रंगों के साथ जो अमावस्रू की रात को प्रकाश बिखेरती थी, वह दृश्य भी गाँव वालों के लिये वैसा ही था जिस प्रकार 'थॉमस एडीएन' द्वारा न्यू जर्सी पार्क में प्रकाश बल्ब से जगमगाहट करने जैसा, अद्भुतता का दृश्य इन नजारों को देखने वालों के लिए भी था। लगभग आधा एक घण्टे तक का यह दृश्य लोगों को अचम्भित कर किसी चमत्कारी व्यक्ति की कल्पना करते आपसी बातचीज जारी रहता था। लोगों की जिज्ञासा बनी रहती थी। देखने वालों का मन प्रफुल्लित हो जाता था। जिनकी पूर्ण चर्चा कर नहीं सकते हैं।

दीपावली की रात देर रात प्रति वर्ष इस दृश्य का इन्तजार रहता था। तल्ला बखाली वाले तल्ला कचहरी में मल्ला बखाली वाले मल्ला कचहरी से सभी उम्र के लोग नई चीज टकटकी लगाकर देखते थे। बच्चे खूब शोरगुल करके प्रसन्नता जाहिर करते थे।

दरकोट आर्मी कैम्प से आर्मी अन्यत्र कहीं चली गई थी। वर्षों तक विरान पड़ा इस स्थान से सारे टिन शेड बैरक अराजकों ने उखाड़ लिए, तब कहीं जाकर वर्षों बाद पुनः इसी स्थान पर सीमा सड़क संगठन सरकारी संस्था ने अपना मुख्यालय बना लिया है। जिनका कार्य सीमा सड़क निर्माण करना है। जहाँ से भारत-तिब्बत सीमा जोहार घाटी व स्थानीय मार्ग को दुरुस्त किया जाता है। जिसमें स्थानीय लोगों के लिये श्रम रोजगार के अवसर भी हैं।

फुलझड़ियों की यादें तो अतीत की सामाजिक स्थितियों का ज्ञान कराती हैं, हमारी समझ को भी रेखांकित करता है। लोगों के जीवन में विकास के साथ जो परिवर्तन आया 'फुलझड़ियां' कुछ तो बताती हैं।

चरम पर है मनमर्जी

उत्तराखण्ड कार्मिक एकता मंच ने उठाया सवाल

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड कार्मिक एकता मंच ने वार्षिक स्थानान्तरण अधिनियम 2017 की धारा 3(घ) में परिभाषित गम्भीर रोग में 'लीवर ट्रांसप्लांट एवं लीवर से सम्बन्धित गम्भीर रोग' को भी सम्मिलित किये जाने सम्बन्धी शासनादेश पर कानूनी रूप से सवाल उठाया है। एकता मंच के संस्थापक अध्यक्ष रमेश चन्द्र पाण्डे ने कहा कि एक्ट में परिभाषित रोगों के अलावा अन्य रोगों को बिना विधिक प्रक्रिया के सम्मिलित नहीं किया जा सकता है।

स्थानान्तरण अधिनियम 2017 के प्राविधानों का अनुपालन किये जाने के सम्बन्ध में कार्मिक एवं सतर्कता अनुभाग 2 के स्तर से अपर सचिव नवनीत पाण्डे के हस्ताक्षर से 6 अक्टूबर को जारी आदेश के बिन्दु-2 पर सवाल उठाते हुए कार्मिक एकता मंच ने दो टूक शब्दों में कहा है कि एक्ट में निहित किसी भी प्राविधान को कार्यकारी आदेशों के जरिए घटाया बढ़ाया नहीं जा सकता है। मंच के संस्थापक अध्यक्ष रमेश चन्द्र पाण्डे ने कहा कि शासन के जिम्मेदार अधिकारियों को इतनी जानकारी तो होनी ही चाहिए कि कौन विषय किसके अधिकार क्षेत्र का है? इसे विधायी के विशेषाधिकार पर अतिक्रमण करार दिया।

राज्यपाल ने किया पन्तनगर किसान मेले का शुभारम्भ

पन्तनगर। राज्यपाल ले.जनरल(सेनि.) गुरमीत सिंह ने 118वें कृषि कुम्भ किसान मेले एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का शुभारम्भ किया। इस दौरान 6 पुस्तकों का विमोचन किया गया व प्रगतिशील कृषकों को सम्मानित किया गया।

गोविन्द बल्लभ पन्त विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि मेले को सम्बोधित करते हुए राज्यपाल ने किसानों और वैज्ञानिकों से कहा कि आज इस इस पवित्र धरती जिसे आधुनिक भारत में हरित क्रान्ति की जन्मस्थली कहा जाता है गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में अन्न दाताओं और आप सभी के बीच सुखद पल है। राज्यपाल ने कहा कि विकसित भारत 2047 के संकल्प को साकार करने में उत्तराखण्ड महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कहा कि भारतीय संस्कृति में किसान को सृष्टि का पोषक कहा गया है।

एडवेंचर टूरिज्म से होगा बॉर्डर गांवों का विकास

पिथौरागढ़। प्रदेश के सीमान्त क्षेत्रों में एडवेंचर टूरिज्म और होमस्टे संस्कृति को बढ़ावा देने और अन्तर्राष्ट्रीय बॉर्डर से लगे गांवों का आर्थिक और सामाजिक विकास करने के उद्देश्य के साथ आगामी 2 नवम्बर को 14500 फीट की ऊंचाई (गुंजी से आदि कैलास) पर होने वाले अल्ट्रा मैराथन की तैयारियां तेज हो गई हैं। पर्यटन सचिव धीराज सिंह गर्ब्याल के अनुसार उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर सीएम के निर्देशन में यह आयोजन किया जा रहा है। प्रधानमंत्री की पहल के अनुरूप विंटर टूरिज्म को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। ऐसे आयोजनोंसे सीमान्त क्षेत्रों में पर्यटन के नए आयाम खुलेंगे और युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान होंगे।

ज्योतिष की बातें- 251

पिघलता हिमालय का 'ज्योतिष की बातें' नामक यह स्थाई स्तम्भ पांच वर्ष पूर्ण कर छठे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अतः पिघलता हिमालय के सम्पादक महोदय एवं पाठकों को मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ।

24 अक्टूबर 2025 को बुध समराशि वृश्चिक में प्रवेश करेगा। वहाँ पर गुरु की शुभदृष्टि भी पड़ेगी। अतः बुध शुभफल प्रदान करेगा। बुध, बुद्धि, व्यवसाय, वाणिज्य, लेखन, साहित्य आदि अपने कारक विषयों में अगले 30 दिन तुला, सिंह, मिथुन, मेष, कुम्भ व मकर राशि के जातकों को शुभफल प्रदान करेगा। 23 अक्टूबर 2025 को सूर्य सामनमान से वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा अतः हेमन्त ऋतु का प्रारम्भ होगा। अगले दो माह त्रिफला चूर्ण में थोड़ी सोंठ मिलाकर सेवन करना स्वास्थ्यप्रद रहेगा।

नरक चतुर्दशी, छोटी दिवाली- कार्तिक कृष्णपक्ष चतुर्दशी अरुणोदय व्यापिनी तिथि, तदनुसार सोमवार 20 अक्टूबर 2025 को छोटी दिवाली का पर्व मनाया जाएगा।

दीपावली- कार्तिक कृष्णपक्ष अमावस्या प्रदोष व्यापिनी तिथि में दीपावली का पर्व मनाया जाता है। यदि दो दिन प्रदोष काल में अमावस्या हो तो अगले दिन दीपावली का पर्व होता है। तदनुसार मंगलवार 21 अक्टूबर 2025 को दीपावली पर महालक्ष्मी पूजन किया जाएगा।

गोवर्धन पूजा- कार्तिक शुक्लपक्ष प्रतिपदा उदय व्यापिनी त्रिमुहूर्ता तिथि में गोवर्धन पूजा की जाती है। अतः बुधवार 22 अक्टूबर 2025 को गोवर्धन पूजा अर्थात् अन्नकूट पूजा का उत्सव मनाया जाएगा।

भैयादूज- कार्तिक शुक्लपक्ष द्वितीया अपराह्न व्यापिनी तिथि में तदनुसार बृहस्पतिवार 23 अक्टूबर 2025 को यमद्वितीया अर्थात भैयादूज का पर्व मनाया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 141

देशों की परस्पर निर्भरता

कोई भी व्यक्ति या राष्ट्र पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं हो सकता। एक व्यक्ति के घर पर सारी वस्तुएं पैदा नहीं होतीं, उसे दूसरे व्यक्तियों से, बाजार से अन्य वस्तुएं प्राप्त करनी पड़ती हैं। एक गाँव का विचार करें तो गाँव में सभी प्रकार की आवश्यक वस्तुएं उत्पन्न नहीं होतीं, उस गाँव को अन्य गाँव से सामान लेना पड़ता है। यदि पूरे एक जिले का भी विचार करें तो जिले में भी सभी प्रकार की खाद्य वस्तुएं, सभी औषधीय वनस्पतियां, सभी प्रकार के कपड़े, खनिज, रत्न आदि उत्पन्न नहीं होते हैं, उस जिले को भी बहुत से उत्पादों को दूसरे जिले से आयात करना पड़ता है। इसी प्रकार यदि एक राज्य की बात करें तो किसी राज्य में खाद्य वस्तुएं अधिक होती हैं लेकिन खनिज नहीं हैं, कहीं पर विद्युत उत्पादन नहीं हो पात है, कहीं पर उद्योग नहीं है। इस प्रकार कोई एक प्रान्त या राज्य भी पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो सकता। यदि किसी बड़े राज्य के पास सब कुछ हो भी जाए तो सुरक्षा के लिए हथियार उपलब्ध नहीं होंगे। गम्भीरता से विचार करें, यदि एक राज्य दूसरे राज्यों से पूर्ण रूप से सम्बन्ध तोड़ ले तो उस राज्य की प्रजा कब तक जीवित रह पाएगी!

इसी प्रकार विश्व में जो सैकड़ों देश हैं वे भी पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं हो सकते। उन सभी देशों को एक दूसरे से आयात निर्यात के बिना किसी भी देश की प्रजा अपना जीवनयापन नहीं कर सकती। लेकिन अपना देश भारत एक ऐसा देश है जो पूर्णतः आत्मनिर्भर है। यदि विश्व का कोई भी देश भारत को किसी भी प्रकार का एक भी सामान न भेजे तो भी यहाँ की प्रजा सुखी और सम्पन्न बनी रह सकती है। इसीलिए यह भारत, देश ही नहीं बल्कि राष्ट्र कहा जाता है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

बरेनीग का प्रमुख मन्दिर

नाग मन्दिर में बनेगा परिक्रमा पथ

बेरीनाग। मानसखण्ड मन्दिर माला के अन्तर्गत नाग मन्दिर में परिक्रमा पथ बनने जा रहा है। मानसखण्ड मन्दिर माला में सम्मिलित होने के बाद तय हुआ है कि नाग मन्दिर में 400 मीटर सीसी परिक्रमा पथ बनेगा। 18 लाख की लागत से बनाए जाने वाले इस पथ का नगर पालिका चेयरमैन हेमा पन्त ने शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि यह दिन क्षेत्र के लिये ऐतिहासिक है। भविष्य में एक करोड़ की लागत से मन्दिर का सौन्दर्यीकरण किया जाएगा।

मन्दिर ट्रस्ट समिति के अध्यक्ष ललित पन्त ने बताया कि मानसखण्ड मन्दिर माला में मन्दिर का पुनर्निर्माण और सौन्दर्यीकरण किया जाएगा। लोक निर्माण विभाग के ईई मनोज कुमार भट्ट ने मानसखण्ड मन्दिर माला में होने वाले विभिन्न कार्यों की जानकारी दी।

इस अवसर पर नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष हेम पन्त, सभासद सुनील पन्त, पूर्व सभासद डीएल शाह, पुजारी शंकर पन्त, ईओ भगवती प्रसाद पाण्डे, रिंकू नैनवाल, जीवन आदि थे। उल्लेखनीय है कि क्षेत्र के प्रमुख मन्दिर के रूप में नाग मन्दिर है। क्षेत्र के आस-पास भी अष्टकुलीन नागों के तमाम मन्दिर हैं, जिनकी मान्यता हमेशा से रही है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

कुमाऊं उकतर महोत्सव

चम्पावत। नेपाल सीमा से लगे रौशाल में तीन दिवसीय कुमाऊं एकता महोत्सव में भव्य शोभायात्रा निकाली गई। समिति के अध्यक्ष सतीश भट्ट की अध्यक्षता व संजय पाण्डे के संचालन में जिला पंचायत सदस्य पुष्कर राम ने महोत्सव का उद्घाटन किया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में स्थानीय कलाकारों ने मन मोह लिया।

सुपरस्टार रजनीकांत बद्रीनाथ धाम पहुंचे

चमोली। फिल्म अभिनेता सुपरस्टार रजनीकान्त ने बद्रनाथ धाम पहुंचकर भगवान बद्रीविशाल के दर्शन किये। उन्होंने देश की प्रगति व समृद्धि की प्रार्थना की। मन्दिर समिति की ओर से उनका स्वागत किया गया। रजनीकान्त हर साल प्रदेश के तीर्थो। के दर्शन के लिये आते हैं।

लोहाली की पहाड़ी में सुरक्षात्मक कार्य

नैनीताल। भवाली-अल्मोड़ा राजमार्ग में लोहाली की अतिसम्वेदनशील पहाड़ी से गिरते बोल्डरों को रोकने के लिये केन्द्र सरकार से एनएच विभाग को पहाड़ी में सुरक्षात्मक कार्यों के लिए 21 करोड़ की धनराशि जारी हुई है। कोसी नदी के नीचे पानी के कटाव को रोकने के लिये भी कार्य किया जाना है। बताया गया है कि टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के निर्देशों पर इपीसी कांटेक्टर विशेषज्ञों की टीम से निर्माण कार्य कराया जाएगा।

कुम्भ के लिये केन्द्र से 3472 करोड़

देहरादून। हरिद्वार कुम्भ को 150 वर्ग किमी क्षेत्रफल में भव्य बनाने के लिये राज्य ने केन्द्र से 3472 करोड़ रुपये बजट की मांग रखी है। कुम्भ जनवरी से अप्रैल के बीच होना है जिसमें 21 करोड़ लोगों के आने का अनुमान लगाया जा रहा है। 2021 के कुम्भ के दौरान कोविड के बावजूद 66.25 लाख लोग चार शाही स्नान पर पहुंचे थे।

जैनल-स्याल्दे मोटर पर पर सुधारीकरण

स्याल्दे। लोनिवि ने जैनल से स्याल्दे होते हुए देघाट तक 20 किमी सड़क सुधारीकरण कार्य शुरू कर दिया है। इससे 30 से अधिक ग्रामों की आबादी को लाभ होगा। सल्ट विधायक महेश जीना ने कार्य का शुभारम्भ किया।

अल्मोड़ा जाम से बेहाल

अल्मोड़ा। नगर में प्रतिदिन यातायात दबाव और पार्किंग की उचित व्यवस्था न होने से जबर्दस्त जाम हो रहा है। जाम से बेहाल माल रोड में यात्रियों व स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान में नगर निगम ने भैरव मन्दिर के पास दोपहिया वाहनों के लिये पार्किंग बनाई है लेकिन इसका संचालन नहीं हुआ है। जिला पुस्तकालय के पास पार्किंग भी संचालित नहीं हो पाई है।

संघर्ष समिति जालली अपनी मांगों को लेकर आन्दोलन पर उतारू

रानीखेत। संघर्ष समिति जालली अअपने मांगों को लेकर आन्दोलन पर उतारू है। वर्षों पहले भी तहसील की मांग को लेकर जिस प्रकार का आन्दोलन क्षेत्रवासियों ने किया था और उसका परिणाम शून्य मिला। उसके बाद से इस बार शुरू हुआ आन्दोलन फिर से जोश में है। जालली उमण्डल क्षेत्र की समस्याओं को लेकर समिति ने कहा है कि जब तक उनकी मांग पूरी नहीं होती यह आन्दोलन जारी रहेगा। जालली-नागार्जुन मोटर मार्ग निर्माण, ईड़ा-बिरोली मोटर मार्ग, ईड़ा-सेल्टा-चौधार मार्ग के डामरीकरण, इसी प्रकार जालली के गिरखेत से भेटी-कामा मार्ग, बाबन-गनोली मार्ग, बाबन-बिल्लाड़ मार्ग के डामरीकरण, जालली उप तहसील को पूर्ण तहसील का दर्जा देने, डहल-जालली-भटकोट पेयजल योजना का पुनर्गठन करने, बिजली लाइनों को सुधारने, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र जालली का उच्चीकरण करने, पशु चिकित्सालय और सगनेटी में चिकित्सकों की नियुक्ति की मांग की है। क्षेत्रवासी बारी-बारी धरने पर बैठ रहे हैं।

हल्द्वानी की सड़कों का चौड़ीकरण

हल्द्वानी। शहर के सड़कों के चौड़ीकरण का काम दो-चार दिन का नहीं बल्कि यह लम्बा प्रोजेक्ट है। अतिक्रमण हटाओ अभियान के अलावा चौराहों की फैलाकर सुन्दर बनाने से लेकर सड़कों को चौड़ा करने के इस अभियान में अब नैनीताल रोड और कालाढूंगी रोड के लिये गाजियाबाद की कम्पनी तैयार है। बताया जा रहा है कि टैण्डर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और 244 करोड़ का प्रोजेक्ट धुंआधार चलेगा। प्रधानमंत्री की ओर से की गई घोषणा के अनुसार एडीबी वित्त पोषित योजना के तहत शहर में सड़कों के चौड़ीकरण के साथ ही ड्रेनेज सिस्टम को ठीक किया जाना है। इसमें मुख्य सड़कों के किनारे बरसाती नाले बनाए जाने हैं। 66.75 किमी लम्बी नालियां इसमें बननी हैं। नैनीताल रोड पर नरीमन चौराहे से तीनपानी तक 10 और कालाढूंगी रोड पर कालू सिद्ध मन्दिर से कटघरिया तक 6 किमी के दायरे में आने वाले चौराहों का सौन्दर्यीकरण किया जाएगा। साथ ही जल भराव वाले क्षेत्रों में ट्रीटमेंट प्रस्तावित है। बताया जा रह है इस कार्य के लिये सड़कों को फिर से उधेड़ा जाएगा। परियोजना प्रबन्धक के अनुसार ढाई साल में यह काम पूरा होना है।

संस्कृत छात्रों को विदेशों में रोजगार

देहरादून। संस्कृत शिक्षा सचिव दीपक कुमार ने कहा है कि उत्तराखण्ड के संस्कृत छात्रों को अब विदेशों में भी रोजगार मिलेगा। इसके लिये सम्भावनाएं तलाशी गई हैं। नई दिल्ली में इस सम्बन्ध में वह दो विदेश सचिवों से मिल चुके हैं। विदेश सचिव (दक्षिण) नीना मल्होत्रा और विदेश सचिव पी. कुमारन से हुई मुलाकात में विदेशों में रोजगार की सम्भावनाओं पर चर्चा की गई। विदेश सचिवों की ओर से बताया गया कि इस सम्बन्ध में सभी राजदूतों को पत्र लिखा जाएगा। उन्हें बताया जाएगा कि विश्व के जिस भी देश में संस्कृत छात्रों की जरूरत है, इससे अवगत कराया जाए। ताकि उत्तराखण्ड के संस्कृत छात्रों में रोजगार उपलब्ध कराया जा सके। संस्कृत शिक्षा सचिव ने बताया कि जल्द ही इस सम्बन्ध में सचिव विदेश मंत्रालय को पत्र लिखा जाएगा। विदेश सचिव (दक्षिण) ने यह भी बताया कि 24-25 नवम्बर 2025 को कुरुक्षेत्र डेवलपमेंट बोर्ड की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

गणाई गंगोली कालेज भवन को खतरा

गंगोलीहाट। राजकीय महाविद्यालय गणाई गंगोली के भवन को भू-धंसाव के कारण खतरा हो चुका है। कालेज का आंगन जिस प्रकार धंसकर क्षतिग्रस्त हुआ है उससे महाविद्यालय परिवार को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

प्राचार्य सिद्धेश्वर सिंह ने मामले की सूचना उच्च अधिकारियों और तहसील प्रशासन को दे दी है। ग्राम प्रधान कमल उपाध्याय ने रास्ता बनाने और महाविद्यालय भवन के आगे सुरक्षा दीवार लगाने के लिये तहसील प्रशासन को दैवीय आपदा मद से धन स्वीकृत करने की मांग की है।

बताते चलें कि उच्चशिक्षा में दूरस्थ विद्यार्थियों को सुविधा के लिये गणाई गंगोली में भी महाविद्यालय की शुरुआत की गई और इससे आसपास के उन छात्र छात्राओं के लिये एक अवसर बना जो उच्चशिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। कालेज स्वीकृत होने के बाद जैसा कि धीरे-धीरे कार्रवाई होती रहती है। कालेज भवन भी बनकर तैयार हो गया और स्टाफ तैनात हुआ। नए भवन बनने की सबको खुशी हुई लेकिन जिस प्रकार से भू-धंसाव से कालेज में मुश्किलें बढ़ चुकी हैं। कालेज जाने वाला मार्ग भी क्षतिग्रस्त है। उसे तत्काल दुरुस्त किया जाना जरूरी है।

नारायणआश्रम मार्ग पर व्यूप्वांइट बने

पिथौरागढ़। धारचूला के दूरस्थ क्षेत्र में प्रसिद्ध नारायण आश्रम मार्ग में स्थानीय लोगों ने प्रशासन से ट्रेक रूट, व्यू प्वांइट बनाने की मांग की है। पांगला निवासी पूरन सिंह बिष्ट ने जिलाधिकारी को इस बारे में ज्ञापन भी प्रेषित किया है। ज्ञापन देते हुए उन्होंने कहा कि नारायण आश्रम अपने नैसर्गिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान में यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक आवाजाही कर रहे हैं लेकिन पर्यटकों की आवाजाही को यहाँ अव्यवस्थाओं से जूझना पड़ रहा है। कहा कि आश्रम को जोड़ने वाली चार किमी लम्बी सड़क गस्कू की स्थिति दयनीय है। इससे पर्यटकों के अलावा स्थानीय लोग भी परेशान हो रहे हैं।

श्री बिष्ट ने कहा कि नारायण आश्रम में पर्यटन की अपार सम्भावनाएं हैं, ऐसे में यदि इस मार्ग पर जगह-जगह व्यू प्वांइट बनाए जाएंगे और ट्रकरूट होता तो पर्यटकों की आवाजाही बढ़ेगी।

किच्छा पालिका चुनाव पर जवाब-तलब

नैनीताल। किच्छा नगर पालिका के चुनाव नहीं कराये जाने के मामले में प्रदेश सरकार बुरी तरह घिर गई है। हाईकोर्ट ने इस मामले में सुनवाई करते हुए राज्य सरकार से पूछा है कि अभी तक नगर पालिका चुनाव क्यों नहीं कराये गये हैं। इस मामले को किच्छा निवासी नैमुलशन खान, मोहम्मद यासीन और मोहम्मद रफीक की ओर से पृथक पृथक रूप से दायर याचिकाओं के माध्यम से चुनौती दी गई है। साथ ही न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल की पीठ ने इन पर सुनवाई की। याचिकाकर्ताओं की ओर से कहा गया कि सरकार किच्छा नगर पालिका का चुनाव नहीं करवा रही है। पालिका चुनाव वर्ष 2023 से नहीं हुए हैं। तब से पालिका में प्रशासक तैनात किया गया है। उन्होंने बताया कि सरकार ने वर्ष 2018 में किच्छा पालिका का विस्तार करते हुए पहले मुस्लिम बाहुल्य वाले सिरौलीकलां को किच्छा नगर पालिका में शामिल किया और कुछ समय बाद एक अधिसूचना जारी कर सिरौलीकलां के 4 वार्डों को पालिका से बहार किया।

नन्दादेवी परिषद का गठन की मांग

देहरादून। नन्दादेवी राजजात समिति ने 2026 में होने वाली राजजात के लिए प्रदेश सरकार से शीघ्र नन्दादेवी परिषद गठन करने की मांग की है। यात्रा के लिये महज 11 जाह का समय शेष्ज्ञ है। इस बाद यात्रा में एक करोड़ लोगों के शामिल होने का अनुमान है। राजपुर रोड स्थित टिहरी राज परिवार के भजनी प्रताप सिंह पंवार के के आवास में हुई समिति की बैठक में तैयारियों पर चर्चा हुई।

पिथौरागढ़ रुद्रपुर मेडिकल कालेज...

हल्द्वानी। उ.मु.विश्वविद्यालय सहित अन्य कार्यक्रमों में पहुँचे शिक्षा व स्वास्थ्य मंत्री धनसिंह रावत ने कहा कि पिथौरागढ़ और रुद्रपुर मेडिकल कालेज का संचालन अगले वर्ष हो जाएगा। बताया कि प्रदेश में 180 प्रोफेसर और रीडर की नियुक्ति की गई थी जिसमें से 80 को ज्वाइनिंग दे दी गई है। अब राज्य में प्रत्येक 15 दिन में फैकल्टी इंटरव्यू होने जा रहे हैं।

परिक्रमा

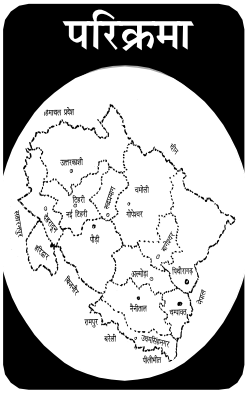

संघ शताब्दी वर्ष में साल भर कार्यक्रम

देहरादून। आरएसएस के शताब्दी वर्ष्ज्ञ पूरे होने के उपलक्ष्य में संघ साल भर कार्यक्रम की रूपरेखा बना चुका है। इसके तहत प्रदेश के 26 जिलें के 1351 मण्डल, बस्ती व नगर सतर पर आयोजन तय हैं। संघ का लक्ष्य है कि उत्तराखण्ड के 20 लाख परिवारों तक पहुंचेंगे। इसमें आपदाग्रस्त क्षेत्रों को इससे अलग रखा गया है। उनके आसपास के क्षेत्रों में यह कार्यक्रम होंगे।

दिवाली के बाद होंगे उपचुनाव

उत्तराखण्ड में दिवाली के बाद 33114 ग्राम पंचायत सदस्यों के पदों पर उप चुनाव होंगे। पहले 15 अक्टूबर तक त्रिस्तरीय पंचायतों के खाली पदों पर उप चुनाव की तैयारी थी, इसके लिये सरकारी अनुमोदन भी था। सचिव पंचायती राज चन्द्रेश कुमार के अनुसार राज्य निर्वाचन आयोग ने बताया है कि उप चुनाव के लिये प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायतों में ग्राम पंचायत सदस्यों के हरिद्वार को छोड़कर चुनाव होने थे। अब यह प्रस्ताव नए सिरे से है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

क्या था कृष्ण के....

प्रथम पृष्ठ का शेष

लगभग उतने ही श्लोक उन दो स्कंधों (10 और 11) में हैं जिनमें कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया गया है। अर्थ यह कि अगर आधी भागवत में अन्य अनेक कथाओं उपकथाओं का विवरण है। महाभारत भागवत में, मुख्यकथा के साथ अनेक अन्य कथा-उपकथा में जोड़ देने को जिस शैली का सूत्रपात व्यास ने किया तो आगे चलकर पुराणकारों ने उसी शैली का अनुसरण किया।

कृष्णलीलाका विवरण देने वाला भागवत महापुराण पहला ग्रन्थ इस देश का है। कहने वालों ने, यानी भारत को हरदम नीचा दिखाने में मशगूल पश्चिमी विद्वानों ने यह साबित करने की कम कोशिश नहीं की कि भागवतपुराण की रचना गुप्तकाल के आसपास की है, पर भारतीय परम्परा अपने स्थापित मत के खिलाफ इस प्रचार को भला कैसे सहन कर पाती? नहीं कर पाई। बेशक कुछ घटा-जोड़ इस तरह के ग्रन्थों में चलता रहा जो कि एक अलग विवेचन का मामला है, पर वेदव्यास द्वारा रचा यह भागवतपुराण कृष्णलीला के भक्तिपरक वर्णन का प्राचीनतम नमूना है। इसी में से फिर आगे चलकर रामकथा को भी भक्ति का ताना बाना मिला जो बाल्मीकि ने अपने रामायण महाकाव्य में न देकर उसे शुद्ध इतिहास बनाया था। इसी भक्ति राग में वह महापुराण कृष्णकथा की उन सभी लीलाओं का वर्णन करता है जो हमारे दिलदिमाग पर सहस्त्राब्दियों से छाई है। कृष्ण को नन्द के पास ले जाया जाना, पूतना उद्धार, कालियदमन, रास लीला, महारास आदि से लेकर कृष्ण से जुड़ी वे सब घटनाएँ जिनका रिश्ता महाभारत कथा से है, इस पुराण में है। इसी लीला वर्णन के प्रवाह में वह रास पंचाध्यायी भी है। (स्कन्ध 10, अध्याय 29-33) जिसमें कृष्ण की गोपियों के साथ रासलीला है। इसी रासपंचाध्यायी के अध्याय 31 में प्रसिद्ध गोपिका गीत है जबकि अध्याय 33 में विश्व की उस महान घटना का वर्णन है जिसे हम भारतवासी महारास कहते हैं जब शरद पूर्णिमा की रात्रि को कृष्ण ने हर गोपी के साथ कृष्ण बनकर एक ही समय में नृत्य किया था, यानी जितनी गोपियाँ उतने ही कृष्ण, जबकि रास में गोपियाँ अनेक, पर कृष्ण एक ही थे।

बस भारतीय इतिहास के इस अद्भुत मीलपत्थर भागवत पुराण की एक बात और बताकर हम इस प्रसंग को पूर्ण कर देते हैं। परेशान होने की क्यों जरूरत नहीं यह तो हम अभी ही बता देंगे, पर फिर भी यह बात जानकर कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है। भागवत महापुराण में कृष्णलीला तो सर्वोत्तम है, पर उसमें राधा का नाम कहीं नहीं आता। यह एक सच है। नाम नहीं आता और यह सच है तो क्या इससे परेशान हुआ जाए? क्या जरूरत है परेशान होने की? कृष्ण की जिन आठ विवाहिता पत्नियों के नाम प्राप्त होते हैं, उनमें राधा नाम नहीं है। मथुरा जाने के बाद कृष्ण कभी राध ा से मिले, ऐसा कोई संकेत उन कथाओं में भी नहीं आता जिनमें राधा की भूमिका अनिवार्य है। विद्वान लोग कहते हैं कि राधा इस नाम का क्रमशः विकास हुआ है। रासलीला के दौरान कृष्ण जिस विशिष्ट गोपिका को लेकर उन्तधीन हो गए थे, उसी का नाम आगे चलकर राध ा हो गया, इस धारणा में दम है। यदि राधा नाम का विकास बाद में हुआ तो इसमें परेशानी की बात क्या है? राधा जिस परमप्रेम का प्रतीक है, जिसके लिए बकायदा विवाह जैसे सामाजिक बन्धन को परम्परा ने स्वीकार नहीं किया, उसे यदि भागवत में अनाम रखा गया है तो इसमें परेशानी क्यों हो? नहीं होनी चाहिए, क्योंकि जैसे कृष्ण के अनेक नाम परम्परा में विकसित हुए हैं पर वे सभी नाम भागवत में नहीं हैं, वैसे ही राधा नाम भी परम्परा ने विकसित किया है जिसके बीज भागवत में हैं, क्या यही कम गौरव की बात है?

(साभार नवभारत टाइम्स)

नैनीताल को लेकर चिन्ता

भूकम्प की दृष्टि से बेहद सम्वेदनशील, भूगर्भ में जमा हो रही भूकम्पीय ऊर्जा

नैनीताल। मध्य हिमालयी क्षेत्र में तेजी से बढ़ रही भूकम्प की घटनाओं से वैज्ञानिक चिन्तित हैं। वाडिया इंस्टीट्यूट देहरादून के वरिष्ठ वैज्ञानिक व निदेशक विनीत गहलोत ने नैनीताल को भूकम्प की दृष्टि से बेहद सम्वेदनशील बताया है। इसके बाद से तो आम जनता भी चिन्ता से घिर चुकी है।

प्रदेशमें पिछले चार सौ वर्ष में कोई बड़ा भूकम्प नहीं आया है। वर्ष 1344 और 1505 में बड़ा भूकम्प आया था। जिससे अनुमान लगाया जा रहा है कि आने वाला समय भूकम्प की दृष्टि से बेहद सम्वेदनशील है। हिमालय क्षेत्र में भूकम्प को लेकर लगातार अध्ययन चल रहे हैं जिनसे पता चला है कि जमीन के भीतर बड़ी मात्रा में एनर्जी एकत्र हो रही है। भूकम्प मापी यन्त्रों से पता चला है कि यह एनर्जी तेजी से जमा हो रही है। इसमें नैनीताल बेहद सम्वेदनशील है। कहा जा रहा है कि इस बार आने वाले भूकम्प की सीमा करीब तीन सौ किमी के आसपास होगी।

वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. विनीत कुमार गहलौत कहते हैं कि बेहद सम्वेदनशील क्षेत्र को चिह्नित कर भूकम्प की छोटी-छोटी घटनाओं की निगरानी हो रही है। जमीन किस तरह से खिसक रही है, जमीन में किस तरह की हलचल हो रही है उस पर वैज्ञानिक विशेष नजर रख रखते हुए अध्ययन कर रहे हैं। उत्तराखण्ड के सम्वेदनशील क्षेत्र के साथ-साथ बीस अन्य स्थानों पर भूकम्प मापी यन्त्रों को लगाया गया है। आगामी समय में में प्रदेश के पन्द्रह स्थानों पर भूकम्पमापी सेंसर लगाने की तैयारी की जा रही है ताकि भूगर्भ में मचने वाली हलचलों का पता लगाया सके। बताया है कि बेहद सम्वेदनशील नैनीताल समेत अन्य शहरों पर माइक्रोमेजेशन विधि से अध्ययन किया जाएगा।

दूसरी ओर लम्बे समय समय से भूकम्प पर अध्ययन कर रहे पद्मश्री हर्ष गुप्ता कहते है। कि आने वाले समय में हमें भूकम्प के साथ रहने की आदत बनानी होगी। इसके लिए अर्थ क्वेक रेजुलियम सोसायटी बनोन की आवश्यकता है। आने वाला समय भूकम्प की दृष्टि से बेहद सम्वेदनशील है। 2005 में मुजफ्फरा-बाद में 82 हजार लोगों की मौत हुई थी।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जंगल में वन महकमे की योजनाएं तलाश रही रास्ता

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड में वन्यजीव संरक्षण से जुड़ी योजनाएं सिस्टम के जंगल में रास्ता तलाश रही हैं। योजनाओं का खाका खींचा गया। शिलान्यास का कार्यक्रम भी हुआ पर वर्षों गुजर जाने के बाद योजनाओं का हाल ढाक के तीन पात वाली कहावत के आसपास ही घूम रहा है। इन योजनाओं के लोकार्पण तो दूर की बात कई का काम तक शुरू नहीं हो सका है। वन्यजीवों के इलाज के लिए नहीं बना अस्पताल वन विभाग ने हल्द्वानी में 400 हेक्टेयर में प्रस्तावित अन्तरराष्ट्रीय चिड़ियाघर के साथ वन्यजीवों के इलाज के लिए अस्पताल, पशु चिकित्सा कर्मियों के लिए आवास से लेकर मानव वन्यजीव संघर्ष को कम करने के लिए काम करने वाले संस्थान की योजना बनाई। इसके लिए अक्टूबर 2016 में शिलान्यास भी हो गया। इसके बाद बैठक, दिशा-निर्देश जारी होने के साथ निदेशक बदलने का काम ही होता रहा है। हल्द्वानी में बनने वाली इस महत्वाकांक्षी योजना के लिए देहरादून में तैनात अधिकारी को नोडल अधिकारी बनाया गया है। यहाँ भी काम शुरू नहीं हो सका है। तराई पूर्वी वन प्रभाग के डीएफओ का कहना है कि सम्बन्धित प्रोजेक्ट के लिए पीपीआर तैयार हुई है जिसे शासन को सौंपा जा चुका है। अधिकारियों के अनुसार पीपीआर के डीपीआर गठन का काम होगा। इस पर मोहर लगती है और औपचारिकता पूरी होती हैं तो फिर काम शुरू होने के आसार बन सकेंगे।

उत्तरकाशी वन प्रभाग के डीएफओ डीपी बलूनी का कहना है कि इसी अक्टूबर में योजना के तहत पहले चरण का काम पूरा करने का लक्ष्य था लेकिन धराली आपदा के चलते काम प्रभावित हुआ है। दूसरी ओर बन्दर, जंगली सूअर फसलों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। इससे लोगों का खेती से मोह भंग हो रहा है। इसके मद्देनजर बन्दरबाड़ा बनाने की योजना बनी। इसमें तराई पूर्वी वन प्रभाग के किशनपुर रेंज में सौ हेक्टेयर क्षेत्रफल में चरणबद्ध तरह से बन्दर बाड़ा बनाया जाना था। इस योजना का भी शिलान्यास हुआ। पर मामला फाइलों से आगे नहीं बढ़ा है। राजाजी टाइगर रिजर्व में हाथी कैम्प है। यहाँ पर हाथी के बच्चों के लिए नियो नेटल केयर सेन्टर बनाने की योजना बनी, पिछले साल घोषणा भी हुई पर काम आज तक शुरू नहीं हो सका है। अब यहाँ पर नियो नेटल केयर सेन्टर के साथ हाथियों की उम्र बढ़ने पर उन्हें अलग अलग जगहों पर रखने के लिए सेन्टर बनाने की योजना का प्रारम्भिक खाका खींचा गया है। पर यह काम कब शुरू होगा? यह भी बड़ा सवाल है।

इस सम्बन्ध में राजाजी टाइगर रिजर्व के निदेशक कहते हैं कि सम्बन्धित योजना में भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है। गंगोत्री धाम के निकट लंका में निर्माणाधीन देश के पहले हिम तेंदुआ संरक्षण केन्द्र का निर्माण लक्ष्य एक बार फिर से आगे खिसकेगा। इस बार धराली-हर्षिल क्षेत्र में आई आपदा के चलते इसका निर्माण प्रभावित रहा। बता दें कि देश के पहले हिम तेंदुआ संरक्षण केन्द्र (एसएलसीसी) की घोषणा वर्ष 2020 में हुई थी। वन विभाग की ओर से इसके निर्माण के लिए ग्रामीण निर्माण विभाग उत्तरकाशी को कार्यदायी संस्था का जिम्मा सौंपा गया जिसने वर्ष 2020 में ही केन्द्र निर्माण के लिए डिजाइन व ड्राइंग का काम पूरा कर लिया था। केन्द्र में करीब 4.87 करोड़ की लागत से हिम तेंदुआ संरक्षण केन्द्र के साथ कैफेटेरिया का निर्माण प्रस्तावित है। मानव वन्य जीव संघर्ष का सबसे बड़ा कारण जंगलों का सिमटता दायरा है यानी वन्यजीवों का जो घर है इसका दायरा काम होता जा रहा है। इंसान अपनी मानव बस्ती बढ़ाते जा रहे हैं। विकास के नाम पर तो कभी खेती के नाम पर या फिर कभी मानव बस्तियां बसाने के नाम पर जंगलों पर अंधाधुंध कटान हो रहा है। यही वजह है कि मानव वन्य जीव संघर्ष ज्यादा हो गया है। मानव वन्य जीव सह अस्तित्व के प्रमुख मुद्दे आर्थिक नुकसान, सुरक्षा जोखिम, भोजन और जल की कमी, संरक्षण और विकास में टकराव है जिसमें आर्थिक नुकसान में फसल और मवेशियों की क्षति होती है। साथ ही बुनियादी ढांचे को भी नुकसान होता है। वहीं वन्यजीवों के साथ संसाधनों के लिए हमेशा मानव और वन्यजीवों के बीच संघर्ष होता है। विशेष रूप से जल स्रोतों के लिए, जो मानव समाज और वन्यजीवों दोनों को प्रभावित करती है। अब ऐसे में मानव वन्य जीव सह अस्तित्व के समाधान में इसके लिए एक नीतिगत पहल होनी चाहिए जिसमें ग्राम पंचायत को सशक्त बनाना होगा, होने वाले नुकसान के लिए पुख्ता योजनाएं बनानी होंगी और ग्राम स्तर पर ही अन्तर विभाग्य समितियां का गठन करना होगा। इसके अलावा प्रौद्योगिकी का भी इस्तेमाल किया जा सकता है जिसमें पूर्व चेतावनी प्रणाली यानी अर्ली मार्निंग सिस्टम को लगाया जा सकता है। खासकर यह इन्सानी खेती और रेलवे ट्रैक पर कारगर सिद्ध होता है। इसके अलावा निगरानी के लिए ड्रोन और सामुदायिक जन जागरूकता के लिए हॉटलाइन नम्बर्स का उपयोग भी किया जा सकता है। इसके अलावा समुदाय आधारित दृष्टिकोण भी रखना होगा यानी स्थानीय समुदायों को संरक्षण में शामिल करना और उनके पारम्परिक ज्ञान को महत्व देना। बुनियादी ढांचे का निर्माण भी पुख्ता किया जाना चाहिए।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

प्रमुख विशेषताएं

- उत्तराखंड विधानसभा अधिनियम संख्या 23/2005 द्वारा स्थापित
- राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय
- किसी के लिए भी, कभी भी, कहीं भी शिक्षा (आयु, समय और स्थान का लचीलापन)
- कामकाजी और ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के लिए उच्च शिक्षा
- NEP-2020 के अनुसार सभी यूजी कार्यक्रम/पाठ्यक्रम में प्रवेश
- ऑनलाइन प्रवेश: ग्रीष्मकालीन सत्र (जुलाई) और शीतकालीन सत्र (जनवरी)
- शहीद सैनिकों की विधवाओं, घरेलू निर्धन महिलाओं,विकलांग व्यक्तियों, जेल कैदियों, तृतीय जेंडर के लिए विशेष शुल्क छूट
- अध्ययन केंद्र, परीक्षा केंद्र, कार्यक्रम सुधार/परिवर्तन के लिए ऑनलाइन आवेदन करें
- परामर्श सत्र, प्रयोगशाला कार्यशाला/प्रयोगात्मक परीक्षा
- परीक्षा, डिग्री के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया

ऑनलाइन असाइनमेंट्स
ऑनलाइन पाठ्य सामग्री

शिक्षार्थी सहायता सेवाएँ

क्षेत्रीय केंद्र: 08

गढ़वाल क्षेत्र: देहरादून, रूड़की, पौड़ी, उत्तरकाशी

कुमाऊँ क्षेत्र: हल्द्वानी, रानीखेत, कर्णप्रयाग,पिथौरागढ़

शिक्षार्थी सहायता केंद्र :131

आदर्श अध्ययन केंद्र : 02

हल्द्वानी (16000) एवं, देहरादून (11000)

फ़ोन
05946-286000
05946-286043

वेबसाइट
www.uou.ac.in
https://online.uou.ac.in

admission@uou.ac.in
exam@uou.ac.in

swayam
SWAYAM PRABHA 20

पता:
ट्रांसपोर्ट नगर के पीछे, तीनपानी बाईपास, हल्द्वानी-263139, नैनीताल, उत्तराखंड

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)